# Durga Chalisa | दुर्गा चालीसा

**|| ॐ श्री गणेशाय नमः ||**

नमो नमो दुर्गे सुख करनी, नमो नमो अम्बे दुःख हरनी ||1||
निरंकार है ज्योति तुम्हारी, तिहूं लोक फैली उजियारी ||2||

शशि ललाट मुख महाविशाला, नेत्र लाल भृकुटि विकराला ||3||
रूप मातु को अधिक सुहावे, दरश करत जन अति सुख पावे ||4||

तुम संसार शक्ति लै कीना, पालन हेतु अन्न धन दीना ||5||
अन्नपूर्णा हुई जग पाला, तुम ही आदि सुन्दरी बाला ||6||

प्रलयकाल सब नाशन हारी, तुम गौरी शिवशंकर प्यारी ||7||
शिव योगी तुम्हरे गुण गावें, ब्रह्मा विष्णु तुम्हें नित ध्यावें ||8||

रूप सरस्वती को तुम धारा, दे सुबुद्धि ऋषि मुनिन उबारा ||9||
धरयो रूप नरसिंह को अम्बा, परगट भई फाड़कर खम्बा ||10||

रक्षा करि प्रह्लाद बचायो, हिरण्याक्ष को स्वर्ग पठायो ||11||
लक्ष्मी रूप धरो जग माहीं, श्री नारायण अंग समाहीं ||12||

क्षीरसिन्धु में करत विलासा, दयासिन्धु दीजै मन आसा ||13||
हिंगलाज में तुम्हीं भवानी, महिमा अमित न जात बखानी ||14||

मातंगी अरु धूमावति माता, भुवनेश्वरी बगला सुख दाता ||15||
श्री भैरव तारा जग तारिणी, छिन्न भाल भव दुःख निवारिणी ||16||

केहरि वाहन सोह भवानी, लंगुर वीर चलत अगवानी ||17||
कर में खप्पर खड्ग विराजै, जाको देख काल डर भाजे ||18||

सोहै अस्त्र और त्रिशूला, जाते उठत शत्रु हिय शूला ||19||
नगरकोट में तुम्हीं विराजत, तिहुँलोक में डंका बाजत ||20||

शुम्भ निशुम्भ दानव तुम मारे, रक्तबीज शंखन संहारे ||21||
महिषासुर नृप अति अभिमानी, जेहि अघ भार मही अकुलानी ||22||

रूप कराल कालिका धारा, सेन सहित तुम तिहि संहारा ||23||
परी गाढ़ सन्तन पर जब जब, भई सहाय मातु तुम तब तब ||24||

अमरपुरी अरु बासव लोका, तब महिमा सब रहें अशोका ||25||
ज्वाला में है ज्योति तुम्हारी, तुम्हें सदा पूजें नर-नारी ||26||

प्रेम भक्ति से जो यश गावें, दुःख दारिद्र निकट नहिं आवें ||27||
ध्यावे तुम्हें जो नर मन लाई, जन्म-मरण ताकौ छुटि जाई ||28||

जोगी सुर मुनि कहत पुकारी, योग न हो बिन शक्ति तुम्हारी ||29||
शंकर आचारज तप कीनो, काम अरु क्रोध जीति सब लीनो ||30||

निशिदिन ध्यान धरो शंकर को, काहु काल नहिं सुमिरो तुमको ||31||
शक्ति रूप का मरम न पायो, शक्ति गई तब मन पछितायो ||32||

शरणागत हुई कीर्ति बखानी, जय जय जय जगदम्ब भवानी ||33||
भई प्रसन्न आदि जगदम्बा, दई शक्ति नहिं कीन विलम्बा ||34||

मोको मातु कष्ट अति घेरो, तुम बिन कौन हरै दुःख मेरो ||35||
आशा तृष्णा निपट सतावें, रिपु मुरख मोही डरपावे ||36||

शत्रु नाश कीजै महारानी, सुमिरौं इकचित तुम्हें भवानी ||37||
करो कृपा हे मातु दयाला, ऋद्धि-सिद्धि दै करहु निहाला ||38||

जब लगि जिऊं दया फल पाऊं, तुम्हरो यश मैं सदा सुनाऊं ||39||
श्री दुर्गा चालीसा जो कोई गावै, सब सुख भोग परमपद पावै ||40||

देवीदास शरण निज जानी, करहु कृपा जगदम्ब भवानी ||41||

**|| इति श्री दुर्गा चालीसा सम्पूर्ण ||**